ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या-१२
दिनांक- शुक्रवार,१२ फरवरी, २०२१

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 21.3 एवं 11.2 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 89 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 60 प्रतिशत, हवा की औसत गति 6.0 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण 3.6 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाष अवधि औसतन 7.0 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 18.5 एवं दोपहर में 22.9 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(13–17 फरवरी, 2021)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 13–17 फरवरी, 2021 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान में हल्के बादल आ सकते है। मौसम के शुष्क रहने की संभावना है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 25 से 28 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 13 से 15 डिग्री सेल्सियस के बीच रह सकती है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5 से 7 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्यतः पछिया हवा चलने का अनुमान है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 90 प्रतिशत तथा दोपहर में 60 से 70 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- शुष्क मौसम को देखते हुए किसान भाई आलू की तैयार फसल की खुदाई करें। खुदाई के 15 दिनों पूर्व सिंचाई बन्द कर दे। बीज वाली आलू की फसल की उपरी लती काट दें।
- पूर्वानुमान की अवधि में मौसम के शुष्क रहने की संभावना केा देखते हुए समय से बोयी गयी गेहूँ की फसल जो गाभा की अवस्था में आ गयी हो उसमें सिंचाई कर 30 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टेयर की दर से उपरिवेषन करें। बसन्तकालीन ईख एवं शकरकन्द की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। अक्टुवर–नवम्बर महीनों मे रोपी गई ईख की फसल में हल्की सिंचाई करे। जो किसान भाई बसन्तकालीन ईख लगाना चाहते हैं, खेत की तैयारी कर बुआई शुरु करें।
- गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई के लिए जिन किसान भाईयों की खेत की तैयारी हो चुकी है बुआई शुरु कर सकते हैं तथा जिन किसानों का खेत तैयार नही है वैसे किसान भाई खेतों की तैयारी जल्दी करें। 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें। शुष्क मौसम की संभावना को देखते हुए किसान हल्दी एवं ओल की तैयार फसलों की खुदाई प्राथमिकता से करें।
- गरमा मक्का की बुआई के लिए मौसम अनुकूल हो रहा है। बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। सुवान, देवकी, गंगा–11, शक्तिमान–1,2,3,4 एवं 5 किस्में बुआई के लिए अनुषंसित है। बीज दर 20 किलोग्राम
- भिंडी की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। बुआई के समय उन्नत किस्में जैसे परभनी क्रान्ति, अर्का अभय, अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, के0एस0–312, ओकरा–04, पंजाब–7, पंत भिडी–1, काषी प्रगति तथा संकर किस्में जैसेः भवानी, कृष्णा, काषी भैरव, काषी महिमा आदि उपयुक्त है। बीज दर 15 से 18 किलों प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई के समय 200 क्विंटल कम्पोस्ट, 120 किलोग्राम नत्रजन, 60 किलोग्राम स्फुर तथा 60 किलग्राम पोटाष व्यवहार करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो 2.5 किलोग्राम जिंक सल्फेट, 1.25 किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं 12.5 किलोग्राम युरिया को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से 15 दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव आसमान साफ रहने पर करें। दीमक कीट का प्रकोप फसल में दिखाई देने पर बचाव हेतु क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर खड़ी फसलों में समान रूप से व्यवहार करें।
- प्याज में थ्रिप्स कीट की देख–रेख करें। थ्रिप्स प्याज को नुकसान पहुँचानेवाला मुख्य कीट है। यह आकार में अतिसुक्ष्म होता है तथा यह पत्तियों की सतह पर चिपक कर रस चुसते है जिससे पत्तियों पर दाग दिखाई देते है जो बाद में हल्के सफेद हो जाते है। थ्रीप्स की संख्या अधिक पाये जाने पर प्रोफेनोफॉस 50 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोप्रिड दवा का 1.0 मी.ली. प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। अच्छे परिणाम हेतु चिपकाने वाला पदार्थ जैसे टीपोल 1.0 मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल में मिलावें। प्याज में निकाई–गुड़ाई एवं आवष्यकतानुसार सिंचाई करें।
- मटर में फली छेदक कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू फलियों में जालीनूमा आवरण बनाकर उसके नीचे फलियों में प्रवेष कर अन्दर ही अन्दर मटर के दानो को खाती रहती हैं। एक पिल्लू एक से अधिक फलियों को नष्ट करता है। अक्रान्त फलियॉ खाने योग्य नही रह जाती, जिससे उपज में अत्यधिक कमी आती है। कीट प्रबन्धन हेतु प्रकाष फंदा का उपयोग करें। 15–20 टी आकार का पंछी वैठका (वर्ड पर्चर) प्रति हेक्टर लगावे। अधिक नुकसान होने पर क्वीनालफास 25 ई0 सी0 या नोवाल्युरॉन 10 ई0 सी0 का 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करें।
- दुधारु पशुओं में डेगनाला बीमारी की संभावना नवम्बर से फरवरी माह के बीच रहती है। यह बीमारी पशुओं को फफुंदयुक्त पुआल खाने से होता है। फफुंदयुक्त पुआल खाने से पशुओं में सेलेनियम विषाक्तता उत्पन्न हो जाती है। इस बीमारी के लक्षण में दुधारु पशुओं के थन एवं पूंछ का सड़ना पाया गया है। इससे बचाव के लिए 1.0 ग्राम सोडियम हाईड्रक्साइड को 400 मि0ली0 पानी में घोल कर उसे 20 किलोग्राम पुआल पर छिड़काव कर पशुओं को खिलाये। साथ में 200 ग्राम तीसी तथा 200 ग्राम छोवा या गुड़ मिलावे। इस बीमारी के उपचार के लिए बीमार पशुओ को पेन्टासल्फ दवा 60 ग्राम पहले दिन खिलाये तथा उसके बाद 15 दिनों तक 30 ग्राम खिलाये।

आज का अधिकतम तापमानः 25.3 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.1 डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः 10.7 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.8 डिग्री अधिक

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ0 ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी